

विदेश से सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति के लिए कोई भी जानकारी आएगी तो हमें भी अब सूचित किया जाएगा।

संस्कृति विभाग द्वारा राज्य के कलाकारों को प्रस्तुति के लिए भेजा जाएगा। इससे छत्तीसगढ़ के कलाकारों को विदेश में प्रस्तुति देने का महत्वपूर्ण मौका मिलेगा। साथ ही हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दुनिया देख सकेगी। इसके माध्यम से राज्य के कलाकारों को विदेशी कल्चर जानने का मौका भी मिलेगा।

मर्यादा छुट्टीने चेवळ ऑफिस
मर्यादा हें इंदूर जिल्हेंत के आर्थिक
वेवळेंत २ जेवनेचरी २५ फरवरी
को गारा ४ जेवनेचरी २५ फरवरी
ने, देवळाना वयल्या उद्योगा भवन,
जोडिया वयल्या मे मनीशी २०२०
के गुणिम वतारसेंत का आयोजन
किया ग्या.

हेंच ज्ञानपट मनीशी वतारसेंत
के लिया मनीशी चेवळर ऑफिस
जेवरी आर फेमिना दिने मे मनीशी
वतारसेंत को वतार-वतार देवळाना
दिल्या मनीशी २०२० के द्वा गुणिम
वतारसेंत वेंदिया ग्या फि एक

खुबसूरती करवळाने हेर देवळ
वतारसेंत हें गारा खुबसूरती को
देवळाना खुबसूरती केवेंत का वरवळी
उमे अरनेचरी खुबसूरती वतारसेंत
जाकनचरी हेंचर ऑफिस वतारसेंत
के लिया हेंचने का सयम मे हेंचनी
ऑफिस वतारसेंत

मनीशी चेवळर ने गुणिम
वतारसेंत मे उजियवत रेवरी
वतारसेंत वेवसल मनीशी चेवळर
ऑफिस जेवरी आर फेमिना दिने का
वेवसल आचार वतारसेंत ह्या जितेदेवळ
अरनेचरी उजियवत हेर कार्यावळ
के ह्या चोंट देवस ह्या

[illegible]

पुरस्कृत चिकित्सकों नेफ्रोलॉजी के विभागाध्यक्ष डॉ. विनय राठौर और एनोटॉमी विभाग के डॉ. अमित त्रिपुड़े शामिल हैं। यह दोनों प्रतिदिन लगभग चार किलोमीटर की साइकलिंग कर घर से संस्थान पहुंचते हैं। डॉ. राठौर का कहना है कि नियमित साइकलिंग से फेफड़े मजबूत होते हैं और फिटनेस बनी रहती है। वह



महशिवरात्रि भारतीयों का एक प्रमुख त्योहार है। यह भगवान शिव का प्रमुख पर्व है। फ़ाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को महशिवरात्रि पर्व मनाया जाता है। माना जाता है कि सृष्टि का प्रारम्भ इसी दिन से हुआ। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस दिन सृष्टि का आरम्भ अग्निनिष्ठा (जो मलयदेव का विशालकाय स्वरूप है) के उदय से हुआ। इसी दिन भगवान शिव का विवाह देवी पार्वती के साथ हुआ था। साल में होने वाली 12 शिवरात्रियों में से महशिवरात्रि को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत सहित पूरी दुनिया में महशिवरात्रि का पर्वान पर्व बहुत ही उत्साह के साथ मनाया जाता है।

12 शिवरात्रियों में से को सबसे महत्वपूर्ण महाशिवरात्रि

समुद्र मंथन अमर अमृत का उत्पादन करने के लिए निधिध था, लेकिन इसके साथ ही हलाहल नामक विष भी पैदा हुआ था। हलाहल विष में बहामाण्ड को मार करने की मन्मता थी और इसलिए केवल भगवान शिव इसे मार कर सकते थे। भगवान शिव ने हलाहल नामक विष को अपने कण्ठ में रखा लिया था। जहर इतना शक्तिशाली था कि भगवान शिव बहुत दर्द से पीड़ित हो उठे और उनका गला बहुत नीला हो गया था। इस कारण से भगवान शिव 'नीलकण्ठ' के नाम से प्रसिद्ध हैं। उपचार के लिए, चिकित्सकों ने देवताओं को भगवान शिव को रात भर जागते रहने की सलाह दी। इस प्रकार, भगवान भगवान शिव के चित्तन में एक सतर्कता रही। शिव का आग्रह लेने और जागने के लिए, देवताओं ने अलग-अलग नृत्य और संगीत बजाने। जैसे सुबह हुई, उनकी भक्ति से प्रसन्न भगवान शिव ने उन सभी को आशीर्वाद दिया। शिवरात्रि इस घटना का उत्सव है, जिससे शिव ने दुनिया को बचाया। तब से इस दिन, भक्त उपवास करते हैं।



पाठकों की बात

पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

रूस और यूक्रेन

यूक्रेन और रूस 'पार्लियामेंट' और 'संसद' और 'असम' में अगर औरों को संख्या पुरस्चों के बराबर होती तो शाब्द युद्ध टल सकता था। यूक्रेन ही क्यों, तुनिया घर में युद्धोन्माद पर लगाम लग सकता है अगर हर जगह विचारों को पुरस्चों के बराबर अवसर दिए जाएं।

मौनिका भादुराव अव दोपहर में

अव दोपहर में चाय के कप कुछ जगहों में सजा लगे हैं। मन में सपने उठने लगे हैं। तपस्वी दोपहरी हो सड़क किनारे खुला हुआ बड़ा स ड्रम हो ड्रम के भीतर हर को खराबी हो पोलिस गोला चला नमक मिला गये का रस हो। और राह र कर चलती हवा हो जो सरोती को सतक को गले के रस की उड़क के लम्बा कर दे। और देदे दो पल सुकने के।

- नवीन शंकर शर्मा

खस पाती



निमंत्रण का गान भूल धर

निमंत्रण का गान भूल धर ज में अमर सेनानी, बैठ डाल पर मुक पपीहा देखा रात भनमनी। समीर शजर पर स्मर जीत जब मधुमास लहेगा, खोल ग्रीवा पुरजोर पर स्मर से यशोमान गयेगा। कूकना अब नहीं, पिपा, सराह पर है जाने है, बिष-बवार में टीस घोलना उचित नहीं माने है। प्रिये मिलन की परिभाषाएं बदल गई खग-मन में, मुक-वेदन में अदिलन सचित अब खजत में। त्वग प्रणय का पड़ पाओ तो पड़ लो, ओ राजाओं! कानन की लुट्टी खुशियों से आँगन नहीं समाओ। मधुमास में खस चिरैया शाख पर कर्म मनमारे ? तज प्रतीक्षा, मधुर मिलन की ओख में भर अंगारों ! मधुमास में मधुमास भले, पर रोता अंतर्सन है ! शोणित से सिंचित पत्तों पर हंसता कव सानन है ? ग्लेबान, कबो मुक पपीहा लाम सजाने वालों सुनो, मुक की कुहक, अरे ओ ! कानन के रखावलों !

- पंकज कुमार ब्रसंत

बवा नहीं है स्वाभिमान भूले हम सब

बचा नहीं है स्वाभिमान भूले हम सब आवाजना कोई विश्वासों के योय नहीं बच बैठे हैं सभी महान। छद्म हूँ हैं देश को राजनीति कैसे हो अब ऐसे में उल्टि नेतृत्व करने वाला ही दोषी कैसे होगा सब प्रगति मान। नैतिक मूल्य बचे नहीं स्वार्थ में गुम हुए कहीं उच्च आदर्श सब मिट गए स्वको है इसका अब पाया। पटु बानी निष्ठा पर रही नहीं सब खुरी से रंछे नहीं यह मंत्र स्वाभिमान पर कर गम टूटता दूर हो ऐसा कोई हमन। देश की पाटी को चंदन जब हो सपुर्णों का वंदन इस तरह खुशखली आपसी सव गाणी मिलकर गूँगा। अपने गूठ का कर्त अधर्षदन मनमूर्ख इंग्लिश का हो खांडन जातिगों का उम्माद बड़ रहा इसे गेक कर्त सब गखंडन।

-रविम ठाकुर

अपने भूले बच्चों का पेट भरने

अपने भूले बच्चों का पेट भरने के लिए उसने अपने ममता दिल के कई हिस्से काटे होंगे। उस के हर एक पल्लव पर उसने ममता के फूल तुम जैसे बड़े होंगे। कब तक उतार पाओगे कर्मों की का, सून लो कौसे अगर काया भी ना चुपने पाए ममता के पंखों में उसने वो काटे अपने फलकों से काटे होंगे। - पर्वती माटी

अटका बादल मन कहीं नहीं

अटका बादल मन कहीं नहीं भटका उसपर एक बादल अटका है जो तुम को छू कर आया मेरे मन के आँगन में बरसा है चाँद भी कहीं नहीं भटका दिल के आसमनों में भटका है तेरे मन को छू कर आया मेरे तन के आँगन में चमका है। - अनिता कपूर

मैं तब तक स्वावो के पीछे

मैं तब तक स्वावो के पीछे भगवान चलाह हूँ जब तस्कर मुझे हलकीकत उपाद दिलकरना ना समने लगे। मैं तब तक ससर करना चाहता हूँ जब तस्कर पावो की धनक मुझे जहाँ पर हूँ वहीं पर रुक कर बैठने को ना कह दे। मैं किसी के हाट झूठे सच्चे रुख से मेहोबबत करना चाहता हूँ। जब तस्कर मुझे उसके किसी भी झूठ और सच से बेवस्त ना हो जाये जीवन सपनों की नदी। निकपों की ठंड है। और निकपों बिना सपनों के संभव नहीं। - कृष्णदीप वर्मा

कभी चाँद तारे रझाते हमें है कभी

कभी चाँद तारे रझाते हमें हैं। कभी रात रजनी बताते हमें हैं। किम रात रजनी जवनी उमर थी। करर केकरा रात दिवानी पहर थी। उन्हें ही जरूरत मुझे भी जरूरत। सपर एक वा मनीले खलसुता। - राजकिशोर मिश्र 'राज प्रतापगुप्ती

समुद्र मन्थन

शिकारी कथा

एक बार पार्वती जी ने भगवान शिवरात्रि पर पूजा, 'ऐसा कौन-सा श्रेष्ठ तपः सत्तल व्रत-पूजन है, जिससे मनुष्यलोक के प्राणी आपसी कृपा सत्तल ही प्राप्त कर लेते हैं?' उतर में शिवजी ने पार्वती को 'शिवरात्रि' के व्रत का विधान बताकर यह कथा सुनाई- 'एक बार विरभानु नामक एक शिकारी था। पशुओं की हत्या करके वह अपने कुटुम्ब को पालता था। वह एक साहूकार का श्रमी था, लेकिन उसका श्रा सत्तल पर न चला सका। श्रमीत साहूकार ने शिकारी को शिवरात्रि में बंद बना लिया। सत्तल से उस दिन शिवरात्रि थी।'

शिकारी ध्यानगन्ध लेकर शिव-सम्पत्ति धर्मिक बातें सुनता रहा। पार्वती को उसने शिवरात्रि व्रत की कथा भी सुनी। सत्तल से ही साहूकार ने उसे अपने पास बुलाया और मा पुराने के विषय में बात की। शिकारी अगले दिन सारा माा लौटा देने का वचन देकर बंधन से छुट गया। अपनी दिनचर्या की गति वह अगले ने शिकार के लिए निकला। लेकिन दिनभर बंदी बूझ ने रहने के कारण भुख-प्यास से व्याकुल था। शिकार करने के लिए वह एक जंगल के किनारे बेल-गुप पर पड़ा बनेला लगा। बेल गुप के नीचे शिवलिंग था जो विष्णुओं से बना हुआ था। शिकारी को उसका पता न पला।

प्रातः बनते बनते उसने जो रजनीयें तीड़ी, वे सत्तल से शिवलिंग पर गिरीं। इस प्रकार दिनभर भुख-प्यास शिकारी का व्रत भी से बना और शिवलिंग पर बेलगुप भी चढ़ गया। एक पहर सारी बातें जाने पर एक गंभीरी मुनी तालाब पर पानी पीने पहुँची। शिकारी ने धनुष पर तैयार चलाकर ज्यों ही प्रत्यक्ष सीपी, मुनी बोली, 'नै गंभीरी! तीर्थ ही प्रसव करनी। तुम एक सत्तल दो जीवी की हत्या करोगे, जो रोक नहीं है। मैं बचो जो जंगल देकर तीर्थ ही तुम्हारे सत्तल प्रस्तुत कर जऊँगी, तब मार लेना।' शिकारी ने प्रत्यक्ष बोली कर दी और मुनी जंगली झाड़ियों में लुप हो गई।

गुरु ही देर बाद एक और मुनी उतर से निकली। शिकारी की प्रसन्नता का दिकान न रहा। रजनीय आने पर उसने धनुष पर बाण चलाया। तब उसे देस मुनी ने विनमतापूर्ण गिरेदन किया, 'हे पश्यी! मैं तीर्थी देर पहले श्रा से गिरपुत हुई हूँ। कामातुर धिरिणी हूँ। अपने प्रिय की खोज में मटक रही हूँ। मैं अपने पति से मिलकर तीर्थ ही तुम्हारे पास आ जाऊँगी।' शिकारी ने उसे भी जाने दिया। दो बार शिकार को लोकर उसका भाव दानवा। वह दिवता ने पद चलाया। सति का अक्षिती पहर बीत रहा था। तभी एक अन्य मुनी अपने बच्चों के साथ उतर से निकली। शिकारी के लिए यह स्त्रीयति अस्वभाव था। उसने धनुष पर तीर चलाते न देर नहीं लगाई। वह तीर खोजे ही बला था वह मुनी बोली, 'हे पश्यी!' मैं इन बच्चों को इनके पित के हवाले करके लौट आऊँगी। इस सत्तल मुझे शिकारी हँस और बोला, सामने आर शिकार को छोड़ दूँ, मैं ऐसा नहीं करूँ। इससे पहले मैं दो बार अपना शिकार कर चुका हूँ। मेरे बच्चे भुख-प्यास से तप्य रहे होंगे। उतर में मुनी ने फिर कहा, जैसे तुम्हें अपने बच्चों की मन्मता सता रही है, रोक फेर मैं मुझे भी। इसलिए शिकारियों के नाम पर मैं तीर्थी देर के लिए जीवनदान नहीं रही हूँ। हे पश्यी! मेरा विश्वास कर, मैं इनके इनके पित के पास लेकर तुम्हें लौटने की प्रतिज्ञा करती हूँ।

मुनी का दीन स्वर सुनकर शिकारी को उस पर दया आ गई। उसने उस मुनी को भी जाने दिया। शिवरात्रि के

फ़ाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि को आदिदेव भगवान शिव 'कराई सूर्यो के समान प्रभाव वाले ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हुए थे।

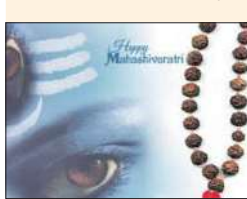


अमर न बेल-गुप पर बैठा बिकला बलात्र तड़-तड़कर नीचे केकात आ रहा था। पाँच पाँच को हुई तो एक बर-पुट मुन उसी तरफे पर उतरा। शिकारी ने सोच लिया कि इसका शिकार वह अवश्य करेगा। शिकारी ने पानी पीकर देसकर मुनीलिंग स्वर में बोला, 'हे पश्यी भाई! यदि तुमने मुझे पूर्व अपने वाली तनी मुनियों तथा छोटे छोटे बच्चों को मार जल है, तो मुझे भी मारने में विलग्न न करो, तकि मुझे उनके विराम में एक था भी दुःख न सहना पड़े। मैं उन मुनियों का पति हूँ। यदि तुमने उन्हें जीवनदान दिया है तो मुझे भी कुछ कृपा का जीवन देने की कृपा करो। मैं उनसे मिलकर तुम्हारे सत्तल उद्विग्न हो जाऊँगा।

मुनी की बात सुनते ही शिकारी के सामने पूरी रात का घटनाक्रम पता चला, उसने सारी कथा मुन को सुना दी। तब मुन ने कहा, 'मेरी तीर्थी पतिव्रती शिव प्रकार प्रतिज्ञाबद्ध होकर गई है, मेरी मृत्यु से अपने धर्म का पालन नहीं कर पाएँगी। अतः जैसे तुमने उन्हें विश्वासपात्र मानकर छोड़ है, वैसे ही मुझे भी जाने दो। मैं उन सबके साथ तुम्हारे सामने तीर्थ ही उद्विग्न होत हूँ।' उपरान्त, सति-जगन्नाथ तन शिवलिंग पर बनेला घुसने से शिकारी का शिकार इच्छा करने से तप्य था। उसने अनन्तर शक्ति का वास से गया था। धनुष तथा बाण सत्तल से तो सहज ही छूट गया। भगवान शिव की अनुकम्पन से उसका शिकार इच्छा करणिक भावों से भर गया। वह अपने अंतित के कर्णों को वाद करके पश्चाताप की जमान में बनेला लगा।

तीर्थी ही देर बाद वह मुन सतिपति शिकारी के सत्तल उद्विग्न हो गया, तकि वह उनका देसकर पर सके, फलतः मुनली पदुओं की सीली सत्तल, सतिपता पद्म सांनूक प्रेमभावना देसकर शिकारी की बड़ी गंभीरी हुई। उसके लोभ से अंधुओं की जड़ लता गयी। उस मुन पतिव्रत को ना मारकर शिकारी ने अपने कण्ठ इच्छा को जीत लिया से हटा सत्तल के लिए कोमल पद्म दत्तल बना लिया। देसलोक से सत्तल देस सत्तल में उस पदत को देस रहे थे। घटना की परिघटी लगे ही देस देसलोक ने पुरा-वर्षा की। तब शिकारी तब मुन पतिव्रत गेय को प्राप्त हुए।

क्या है शिवलिंग



शिव पूजान में बाँटते हैं कि शिवजी के निराकार स्वरूप का प्रतीक 'शिव' शिवरात्रि की जगति शिवि की बलिगति में प्रकट होकर स्वर्णमय बना और विष्णु के दत्त प्रीति हुआ था। वातावरण सति घुमती घराती व अन्त ब्रह्माण्ड का असर ही शिव है। इसलिए इसका आदि व अंत में देसलोक तक के लिए अज्ञात है। सौरमंडल के बाहे के घुमने की कथा ही शिव के तन पर लिपटे रथ हैं। मनुष्यप्रोथिमिक के अनुसार सूर्य, घटना और अग्नि ही उनके तीन वेर हैं। बालों के सुगुह्र जटार, आकाश जल ही स्ति पर स्थित गंगा और सदा ब्रह्माण्ड ही उनका द्यौर है। शिव कभी नगी के असमान की तरह अर्थात घाटी की तरह दानवी, तो कभी सदी के असमान की तरह नलपे लेने से मनुष्य लपेटे तन वाले हैं। वानि शिव लेखी-लेखी ब्रह्माण्ड व अन्त प्रकृति की ही सजात मुर्ती हैं। मानवीकरण ने तन पुरा, द्यौर टिपार पशुपती बालपे के दस कान, इच्छा सदा विष्णु, सूर्य नाति वा केर और अमृत जालि जलदुक्क जलस हय में रहते हैं। दृष्य, आशय, अन्त, ब्रह्माण्ड और निराकार पद्म कृपा का प्रतीक लेने से इसे शिव कहा गया है। स्वन्द प्रभाव में कान है कि आकाश सदा शिव है, हस्ती उसका प्रीत वा आभार है और सव अन्त शुद्ध से उसे उलने में लता लेने के कारण इसे शिव कहा गया है।

QUIZ TIME

- 16 मार्च 2021 को राज्यसभ में नाम के विधायकसमूह सम्मान (संसदीय) विधायक, 2020 पारित किया। इस विधायक में वर्णमय की सीमा बढ़ाकर अन्त सत्तल करने का प्रस्ताव है?
- 29 फरवरी 2021 को एटी टेक गाइड मिशनल शिष्टरस हेलिना और धनराज का सत्तल प्रयोग प्रयोग हुआ। इसे किसके दत्त शिकारित किया गया है?
- 37 अप्रैल 2021 को सांघर्ष शिष्ट में शिष्ट स्वस्थर दिवस मनाया गया। यह 2021 में इस दिवस की सीमा क्या थी?
- 49 फरवरी 2021 को केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने नई दिल्ली में किस बल को 'सद प्रमन- 82 वर्ष की स्वीकृति गावा' प्रस्ताव का निर्माण किया?
- 23 जनवरी 2021 को केन्द्र स्वस्थर दत्त शिष्ट लिखितता शोभी में आपाद प्रक्षेपन में उत्कृष्ट प्रकट के लिए सुभाष पट्ट बल आपाद प्रक्षेपन प्रत्यक्षर 2021 के लिए पुजा गया?

प्रश्न 1 का उत्तर: (5) कोलोकाबाल (6) सदा प्रमन (7) सदा प्रमन (8) सदा प्रमन (9) सदा प्रमन (10) सदा प्रमन

आज का इतिहास

1999 : नाइजीरिया में 15 साल में पहली बार अर्धसैनिक शासन चुनने के लिए मतदान। बड़ी संख्या में लोग वोट डालने पहुंचे। 2002 : गुजरात के आत्मन्यायवादी जवानों वाली सार्वभौमता एक्सप्रेस को भीड़ ने गोशरा स्टेशन पर आने के हवाले किया, 59 कार सेवकों की मौत। 2009 : अमेरिका के राष्ट्रपति बला ओबामा ने ऐलान किया कि इराक से अस्तर 2010 तक सैन्य तत्काल संचायकों को हटा दिया जाएगा और सैनिक 2011 के अंत तक पर लौट जाएंगे। 2010 : नानाजी देसमुख को मृत्युदण्ड दिया। 2010 : चिली में 8.8 की तीव्रता का भूकंप भूकंप और भूकम्पी से घटीय इलाकों में भारी तबाही, इसे पिछले 50 साल में इलाकों का सबसे शक्तिशाली भूकंप बताया गया।

जिलाधीश तारन प्रकाश सिन्हा के समुदायिक भवन में सी-मार्ट खोलेंगे। डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी द्वारा स्थल गाईड लाईन अनुसार सी-मार्ट निर्माणादेशित किया। आयुक्त डॉ. चतुर्वेदी जिलाधीश के निर्देश पर नीलगिरि नागरिकों की सुविधा के लिये सी-मार्ट बताया कि इस मार्ट में स्व सहायक उद्योगों द्वारा हस्तीसह में उत्पादित आभूषण, अंगरक्षक, हैंडलूम उत्पादन आदि वस्तुओं का माध्यम से विभिन्न स्थानीय स्तर पर विक्रेताओं के निर्देश पर सी-मार्ट में स

गाने से हटाते बीज की उमी
छेड़ देते। बताया जाता है
अपने-अपने क्षेत्रों
करीबने के घर पर बीज रख
गिने-गिने किसानों को वितर
कर बचे बीज को ऊंचे दम पर
मार्केट के साहूकारों के पास बे
कर मालामाल हो जाते हैं। जिस
खिलाफ कृषि कार्यवाह्य में
के साथ शिकवत दर्ज होती है
मगर शिकायत किसान और स्थानी
अधिकारी तक सिमट कर रह जा
है। तभी मामले पर कार्यवाही
जगह मामला को आसानी से फ
दफ कर दिया जाता है। फस
उत्पादन में ब्लॉक विच्छेद जा रा
है। क्योंकि सरकार कि रबी फस
बीज किसानों तक नहीं पहुंच पा
है।

स्थान-रायपुर प्राधिकृत अधिकारी

[illegible]